Chapter-9

नवम अध्याय

उ प सं हा र

उपसंहार :

सत्य एवं अहिंसा के पुजारी गांधीजी से भारतीय जनता ही नहीं, वरन् संपूर्ण विश्व परिचित है। गांधीजी की गौरवपूर्ण विचारधारा का प्रभाव मात्र राजनीतिक क्षेत्र पर ही नहीं पड़ा बल्कि उसने सामाजिक आर्थिक, धार्मिक, नैतिक एवं साहित्यिक क्षेत्र को भी समान रूप से आप्लावित किया है। साहित्यिक क्षेत्र में इसका प्रभाव विशेष रूप से देखा जा सकता है। हिन्दी के अधिकांश कवियों ने गांधीजी की इस मंगलकारिणी विचारधारा को हृदयंगम कर उसके स्वरूप को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। व्यक्तिगत प्रभाव के अंतर्गत कवियों ने गांधीजी को चरित्र नायक बनाकर काव्य की सृष्टि की है तथा विचारगत भाव के अंतर्गत उन्होंने ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथावस्तु को चुनकर उनके माध्यम से सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि गांधीवाद के प्रमुख सिध्दांतों को वाणी प्रदान की है।

गांधी विचारधारा के कवियों में सियारामशरणजी का विशिष्ट स्थान है। वे गांधीवाद के प्रबल समर्थक रहे हैं। उन्होंने अपनी कृतियों में गांधीवादी सिध्दांतों एवं जीवनदर्शन की यथार्थ व्याख्या की है। "उन्होंने देश की जिन ज्वलंत घटनाओं एवं समस्याओं का चित्रण किया है उसे एकदेशीयता के स्तर से ऊपर उठकर बृहत्तर मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं एवं संदर्भों से जोड़ दिया है, इसीलिये उनके काव्य की पृष्ठभूमि अतीत हो या वर्तमान उनमें आधुनिक मानव की करुणा, यातना एवं व्दन्व्द का संयुक्त रूप उद्‌घाटित हो सका है। उन्होंने मात्र राष्ट्रीयता को ही महत्व नहीं दिया, उनकी कविता में सर्वत्र सार्वभौम मानवता की उच्चतर संदेश प्रदान करनेवाले गांधीवाद का ही प्रधान स्वर सुनाई देता है।"[१]

वे सन् १९१२ से लेकर सन् १९६३ तक अनवरत रूप से साहित्य साधना करते रहे। इस दीर्घकालावधि में उन्होंने खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य, गीतिनाट्य आदि की रचना की। उनकी रचनाएँ व्दिवेदी युगीन चेतना से अनुप्राणित हैं।

एकांत साधक कवि होते हुए भी गुप्तजी ने युग चेतना की उपेक्षा नहीं की है। वे गांधीजी व्दारा परिचालित राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रभावित हुए। उनकी जिन कृतियों को राष्ट्रीय आंदोलनों से प्रेरणा मिली उनमें 'आर्द्रा,' 'नोआखली में,' 'दैनिकी,' 'आत्मोत्सर्ग' और 'जयहिन्द' प्रमुख है। गांधीवाद का प्रमुख सिध्दांत हृदय परिवर्तन है जिसकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति उनकी अधिकांश रचनाओं में हुई है। 'अग्नि परीक्षा' एवं 'डाकू' कविता में हृदय परिवर्तन का हृदयग्राही चित्रण हुआ है। 'आत्मोत्सर्ग,' में भी प्रेम एवं अहिंसा के व्दारा हृदय परिवर्तन का चित्रण किया गया है। सियारामशरणजी गांधीवाद के व्यवहारिक पक्ष की अपेक्षा सैध्दांतिक पक्ष से विशेष रूप से प्रभावित रहे हैं। उन्होंने 'बापू' काव्य में गांधीजी के सैध्दांतिक पक्ष की ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति की है। 'नकुल'

१. हिन्दी कविता : आधुनिक आयाम : डॉ. रामदरश मिश्र : पृ. ५९

'उन्मुक्त,' 'आत्मोत्सर्ग' आदि कृतियाँ भी गांधीवादी जीवनदृष्टि को ही स्पष्ट करती हैं। इन कृतियों में कवि ने कहीं अपने विचारों को उपदेशक या प्रचारक की भाँति प्रकट नहीं किया, उन्होंने प्रतीकात्मक ढंग से घटनाओं के माध्यम से गांधीवाद की सहज अभिव्यक्ति की है। सत्य, अहिंसा, धर्म, नीति, अस्पृश्यता निवारण, श्रम, नम्रता, विश्व बंधुत्व, पवित्रता और स्वच्छता, ईश्वर पर अटूट आस्था, आशावादिता, लोभ, मोह, क्रोधादि पर विजय की भावना इनके काव्य में विशेष रूप से दृष्टिगत होती है।

सियारामशरण गुप्त के काव्य में गांधीवाद का आध्यात्मिक स्वरूप सफलता के साथ अंकित हुआ है। वैष्णव परिवार में जन्म होने के कारण आस्तिक संस्कारों की उन पर गहरी छाप पड़ी है। इन्हीं आस्तिक संस्कारों के कारण एवं जीवन की विषम परिस्थितियों से गुजरने के कारण बापू के सत्य, अहिंसा आदि सिध्दांतों की ओर उनका ध्यान विशेषरूप से आकर्षित हुआ। बापू के सत्य, अहिंसा एवं प्रेम के महत्त्व को प्रतिपादित करना ही उनके काव्य का मुख्य ध्येय रहा है। अत: गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों का विश्लेषण उन्होंने गौण रूप में ही किया है।

उनकी अधिकांश रचनाएँ चिंतनप्रधान हैं जिनमें उनकी दार्शनिकता की प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। जीवन की छोटी से छोटी घटना भी उनके लिये महत् एवं रहस्यमयी हो उठती है। उन्होंने ईश्वर की अदृश्य सत्ता के प्रति जिज्ञासा एवं कौतूहल भाव प्रदर्शित करते हुए कबीर के समान रहस्यवाद की भी सृष्टि की है। "किंतु प्रेम के उन्माद से अनभ्यस्त रहने के कारण वे वहाँ का पूरा आनंद नहीं उठा सकते।"[१] उनके मनमें गांधीजी के समान ईश्वर के प्रति अटूट आस्था एवं श्रध्दा भाव का प्राधान्य है। उनकी रहस्यवादी रचनाएँ चिंतन प्रधान हैं "आह! यह आलोक उदार" अथवा "धन्य आज का यह ख्रास" या "तेरी क्षण प्रभा में ही, मैं पुलक तुझे पहचान गया" आदि कविताओं में कवि की रहस्यवादी प्रवृत्ति ही

---

१. सियारामशरण गुप्त : सं. डॉ. नगेन्द्र : पृ. ११८

परिलक्षित होती है। 'माली के प्रति,' 'पथ,' 'रजकण' आदि कविताएँ भी इसी कोटि की हैं। 'पथ' कविता में कवि ने परब्रह्म के विराट् स्वरूप को अगम अथाह पथ के रूप में चित्रित किया है। 'रज-कण' में भी ईश्वर की अज्ञेय मौन सत्ता की ओर ही संकेत किया गया है। कवि के लिये परमात्मा का मौन ही अर्थपूर्ण एवं मनभावन हो उठता है। इस कविता में कवि ने यही कहना चाहा है कि सदाचार एवं सत्कृति व्दारा अपने जीवन का उन्नयन कर हम ईश्वर के उच्च पद्तल तक पहुँच सकते हैं। जीवन और जगत् की नश्वरता से भी वे अनभिज्ञ नहीं है। अत: कोरा आडम्बर एवं बाहरी तड़क भड़क उनके स्वभाव के विरुध्द है। 'कब,' 'विषाद,' 'गोपिका' आदि कृतियों में कवि ने जीवन की नश्वरता और संसार के शाश्वत गति-प्रवाह के संबंध में विचार प्रकट किये हैं। "प्रियतम कब आवेंगे कब" जैसी कविता में भक्ति व श्रध्दा का भाव ही मुखरित हुआ है। उनकी आस्तिक भावनाएँ समर्पण भाव से संपृक्त है। इसमें भक्त के विनम्र रूप की ही झाँकी दिखाई देती है। उन्होंने विनयावत होकर अपनी श्रध्दा के सुमन अपने आराध्य के चरणों में सादर समर्पित किये हैं। 'दूर्वा-दल' की 'आत्म-निवेदन,' 'विनय,' 'शरणागत,' 'गूढ़ाशय,' 'कब,' 'विश्वास,' 'मालीके प्रति,' 'प्रियतम' आदि कविताओं में विनम्रता एवं श्रध्दा का भाव ही प्रधान रूप से मुखरित हुआ है। अपनी काव्य प्रतिभा के प्रति कवि को अहंकार नहीं है। उसे दूसरों के काव्य कौशल का भी परिचय मिला है। उनके समक्ष अपने महत्व को नगण्य बताना कवि की विनयशीलता की ओर ही संकेत करता है। जीवनोध्दार ईश्वर की अनुकम्पा से ही संभव है। इसके लिये ह्रदय की शुध्द समर्पण भावना अपेक्षित है। कवि ईश्वर से यही अनुकम्पा बनाये रखने के लिये बार बार विनयपूर्वक अनुरोध करता है। 'गोपिका' में भी उनकी वैष्णवता के प्रति गहन आस्था एवं धार्मिक भावना का ही परिचय मिलता है। वैष्णवता के प्रति गहरी आस्था होते हुए भी सियारामशरणजी का धार्मिक दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं है। उनका दृष्टिकोण अन्य धर्मों के प्रति अत्यंत उदार है। उन्होंने गांधीजी के समान दूसरे धर्मों के प्रति आस्था और विश्वास प्रकट कर

सर्वधर्म समन्वय का प्रयत्न किया है। उनकी दृष्टि में कोई भी धर्म बुरा नहीं है, सभी धर्म सदाचार एवं सद्गुण ही सिखाते हैं, किंतु धर्म के ठेकेदार व्यर्थमें धर्म धर्म की रट लगाकर धर्म को भ्रष्ट करते हैं एवं मानव-मानव के बीच व्देष पैदा करते हैं। गुप्तजी एक ऐसे मानव धर्म की कल्पना करते हैं, जहाँ विश्व के सभी धर्म मिलकर एक हो जाते हैं। बुध्द के वचनों का हिन्दी में अनुवाद करना तथा ईसामसीह के चरित्र पर 'अमृतपुत्र' काव्य का सृजन करना इसका सटिक प्रमाण है कि गुप्तजी के मनमें अन्य धर्मों के प्रति पूर्ण आस्था थी। उनकी धर्म निरपेक्ष नीति का परिचय हमें 'जयहिन्द' में मिलता है। इसमें स्वतंत्र भारत में सभी धर्मों को संरक्षण पाने की इच्छा प्रकट की गई है। 'आत्मोत्सर्ग' एवं 'नोआखली में' कवि ने धार्मिक संकीर्णता, जातिगत अनुदारता एवं साम्प्रदायिक विव्देष को भूलाकर एकता स्थापित करने की ही प्रेरणा दी है। इसमें हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या पर विचार किया गया है। कवि ने साम्प्रदायिक संघर्ष को दूर करने के लिये और दोनों जातियों को एक होकर अपने शत्रु से लोहा लेने के लिये प्रोत्साहित किया है। 'रमजानी' कविता में भी यही प्रकट होता है कि कवि हिन्दू-मुस्लिम एकता का पक्षपाती है। उसे सभी प्राणियों में एक ही तत्व के दर्शन होते हैं। जब एक ही सूत्र में सारे प्राणी अनुस्यूत हैं तब उनमें परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना क्यों उत्पन्न नहीं होती ? 'रमजानी' में कवि ने इसी सौहार्द्र भावना का निरूपण किया है। इसी तात्त्विक एकता की भावना से अभिभूत हो गुणधर विपक्षी के घायल सैनिक को अपने समान ही मनुष्य मानता है तथा उसे वेदना से छटपटाते हुए देख दु:खी हो उठता है और उसकी सहायता करने के लिये उसके निकट जाता है। जब शत्रु सैनिक उसकी कृतज्ञता का उत्तर कृतघ्नता से देते हुए उसपर हिंसक प्रहार करता है तब भी गुणधर उसके प्रति घृणा या रोष प्रदर्शित नहीं करता, बल्कि वह उसे दया का पात्र समझकर क्षमा कर देता है। यह वीरोचित क्षमाभाव गांधीदर्शन का प्रधान अंग है। यह क्षमाभाव प्रतिपक्षी के हृदय को परिवर्तित कर देता है। चंद्रगुप्त की इसी क्षमाभावना से सेल्यूकस का हृदय परिवर्तित हो गया था। 'नकुल,' 'अमृतपुत्र,' 'आर्द्रा' आदि कविता में कवि ने क्षमा भावना का ही निरूपण किया है।

ईश्वर में श्रध्दा भक्ति के आधिक्य के होते हुए भी उन्हें मानव में अंतर्निहित शक्ति पर भी पूर्ण विश्वास है। उन्होंने मानव में निहित इस आंतरिक शक्ति के कारण ही नर को नारायण के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'बापू' एवं 'नकुल' में उन्होंने मानव में दैवीय गुणों का उत्कर्ष दिखाकर उसे नारायण रूप में प्रस्तुत किया है। गुप्तजी पर पिता की आस्तिकता एवं भगवद्भक्ति का गहरा प्रभाव पड़ा था। राम उनके इष्ट देव बन गये थे। कवि ने 'दूर्वा-दल' में संकलित 'तुलसीदास' कविता में राम के प्रति श्रध्दाभाव प्रकट किया है। 'मौर्य विजय' काव्य का आरम्भ भी राम की प्रार्थना से ही हुआ है जो उनकी वैष्णव भावना का द्योतक है। 'अमृतपुत्र' में भी राम की प्रार्थना की गई है। सियारामशरणजी को राम का कोई भी स्वरूप स्वीकार्य है। वे राम के किसी भी रूप के सम्मुख श्रध्दा से नत-मस्तक होने को उद्यत जान पड़ते हैं। गीता के कर्मयोग में भी उनकी दृढ़ आस्था है। उनके मतानुसार जीवन के अंतिम क्षण तक कर्तव्य पालन करना चाहिए। कर्म के प्रति उनकी आस्था 'गत-दिवस' कविता में व्यक्त हुई है। इसमें कवि ने निरंतर कर्मण्यशील बने रहनेका आग्रह प्रकट किया है। गांधीजी ने युग को कर्म का पावन मंत्र दिया था। सियारामशरणजी ने भी 'खनक', 'नेत्रोन्मीलन,' 'नकुल', 'हमारी प्रार्थना' तथा 'गीता संवाद' में कर्म के महत्त्व को प्रतिष्ठित कर हमें निरंतर कर्म करते रहने की प्रेरणा दी है। कर्म के प्रति उनकी यह निष्ठा गांधीवादी प्रभाव को ही स्पष्ट करती है।

सियारामशरणजी आत्मसुधार की भावना को लेकर चले हैं। इसीलिये उनकी रचनाओं में सत्य, अहिंसा, प्रेम, क्षमा, करुणा, त्याग, उत्सर्ग आदि सात्त्विक भावनाओं का पूर्ण परिपाक हुआ है तथा हिंसा, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि असात्त्विक भावनाओं को त्याज्य बताया गया है। आत्मसुधार के निमित्त ही उन्होंने स्वच्छ, निर्मल, पवित्र मन देने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की है। वे ईश्वर का साक्षात्कार करने को इच्छुक हैं, किंतु उसके समक्ष अनेक बाधा व्यवधान हैं, जिन्हें पार कर उस तक पहुँचना कठिन है। ईश्वर के साक्षात्कार के निमित्त ही उन्होंने अहिंसा के व्यवहार का प्रबल समर्थन किया है। अहिंसा के मूल में करुणा का भाव

निहित रहता है। सियारामशरणजी के काव्य में मानवीय करुणा की अजस्त्रधारा प्रवाहित हुई है। मानवीय संवेदना गांधीवाद का प्रमुख अंग है जिसकी प्रधान रूप से अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। वस्तुत: उनकी काव्यचेतना का मूलाधार शुध्द मानवीय ही है। उन्होंने धरती के दीनहीन उपेक्षित प्राणियों के दु:ख से अभिभूत हो उनके प्रति करुणाभाव प्रदर्शित किया है तथा उनके उध्दार का भी प्रयत्न किया है। उनकी आरंभिक कृति 'अनाथ' में मानवीय संवेदना का ही निरूपण हुआ है। इस कृति के रचनाकाल में कविगण निरीह और संत्रस्त मानवता पर ही काव्य रच रहे थे। श्री रामनरेश त्रिपाठी रचित 'मिलन' और 'पथिक' कृतियाँ इसी कोटि की हैं। किंतु 'पथिक' में जहाँ जागरण का स्वर सुनाई देता है वहाँ 'अनाथ' का मोहन आत्मपीड़ा का संदेश ही देता है। वह अपनी छाती पर वज्र रखकर सब कुछ मौन रहकर सहन करता है। उसके प्रति किये जानेवाले अत्याचार कवि के संवेदनशील हृदय को उव्देलित करते हैं। इसमें उन्होंने पुलिस के कटु व्यवहार और नृशंस अत्याचार पर प्रहार किया है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे सियारामशरणजी प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति के दु:ख में सहभागी बनकर उनकी कठिनाइयों से जूझने को प्रयत्नशील हैं। वे सर्वत्र प्रेम का प्रसार करना चाहते हैं। उनकी दृष्टि सर्वोदय सिध्दांत पर विशेष रही है। 'दैनिकी', 'दूर्वा-दल', 'आर्द्रा', 'मृण्मयी', 'नकुल', 'अमृतपुत्र' आदि कृतियों में उनका मानवतावादी स्वर ही प्रकट हुआ है। 'दैनिकी' में संकलित 'मजूर', 'विरखू' 'नर किंवा पशु', 'मनुज' आदि रचनाएँ उनकी संवेदनशीलता की ओर संकेत करती है। यह मानवतावादी विचारधारा शोषण के विरोध में है। सियारामशरणजी की करुणा में स्नेह और सौहार्द्र की भावना का प्राधान्य है। वे मात्र वाणी से ही मानव के समीप नहीं है, किंतु वे सच्चे मन एवं हृदय से उनकी सेवा के लिये तत्पर दिखाई देते हैं। 'दैनिकी' में उनकी मानवतावादी चेतना प्रमुख रूप से स्थान पा सकी है। सियारामशरणजी ने अधिकतर समाज के दीन हीन निस्सहाय और समाज व्दारा त्रस्त व्यक्तियों का ही चित्रण किया है। वर्गभेद में उनका विश्वास नहीं है। वे अमीर-गरीब, स्पृश्य-अस्पृश्य, हिन्दू-मुसलमान सबको आदर की दृष्टि से देखते हैं। उनकी

कविताओं में सर्वजन हिताय की पवित्र भावना ही सन्निहित है। मानवतावादीभावना से संपृक्त होने के कारण उनकी कविता सजीव है तथा वह लोक के अधिक निकटस्थ जान पड़ती है। 'आर्द्रा' की 'नृशंस,' 'एक फूल की चाह' 'खादी की चादर,' 'डाक्टर' आदि रचनाओं के आधारपर उन्हें मानवतावादी कहा जा सकता है। मानवता की सेवा करना ही गांधीवाद का प्रमुख अंग है।

सियारामशरणजी अहिंसा के प्रबल समर्थक हैं। अहिंसा में पूर्ण आस्था होने के कारण ही वे युध्दजन्य विध्वंस को देखकर क्षुब्ध होते हैं। उन्होंने हिंसा से प्रेरित मानव की पाशविकता के मर्मस्पर्शी चित्र अंकित कर मानव के पतन पर दु:ख प्रकट किया है और समाज की शांति एवं कल्याण के लिये हिंसा के स्थान पर अहिंसा एवं प्रेम को ही एकमात्र साधन के रूप में स्वीकार किया है। 'उन्मुक्त' में युध्द की निस्सारता को प्रकट करते हुए कवि ने हिंसानल की शांति के लिये अहिंसा को ही उपयुक्त साधन बतलाया है। 'दैनिकी' में भी कवि ने वैज्ञानिक प्रगति के कारण होनेवाले विध्वंस को चित्रित कर युध्द की विनाशलीला को ही दर्शाया है तथा वैर की आग को प्रेम से ही शांत करने का आदेश दिया है। 'बापू,' 'नकुल,' 'आत्मोत्सर्ग,' 'नोआरवलीमें,' 'अमृतपुत्र' आदि रचनाओं में भी अहिंसा का प्रबल समर्थन किया गया है। अहिंसा के लिये आत्मबल की आवश्यकता है। 'मौर्य विजय' तथा 'नकुल' में शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आत्मिक शक्ति एवं मानसिक बल की श्रेष्ठता का ही मंत्र दिया गया है। सच्चे वीर का कर्म मारना नहीं बल्कि सुरक्षा करना है। कवि ने कायरता का भी विरोध किया है। वे कायरता की अपेक्षा हिंसा को श्रेयस्कर मानते हैं। 'मौर्य विजय,' 'गोपिका,' 'अमृतपुत्र' आदि कविताओं में उन्होंने कायरता की निंदा की है जो कि गांधी दृष्टि के अनुकूल है। मानव मन के शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर और रागव्देषादि असात्त्विक भावनाओं से ग्रस्त मानव जाति के अध:पतन को देखकर उन्हें मर्मांतक पीड़ा होती है अत: उन्होंने इन दुर्गुणों से मुक्त होकर मनको ऊर्ध्वगामी होने का संदेश दिया है।

सियारामशरणजी के काव्य में गांधीजी के धार्मिक विचारों का भी सफल अंकन हुआ है। वे नैतिकता के प्रति पूर्णत: आग्रही हैं। उन्होंने अपनी

कविताओं में सर्वत्र नीति की व्यंजना की है । 'मौर्य विजय' में कवि ने अतीत की पृष्ठभूमि में वर्तमान जीवन की अध:पतित अवस्था का चित्रण कर तत्कालीन नीतिपूर्ण जीवन की ओर ही संकेत किया है । 'दूर्वा-दल' की 'अनौचित्य,' 'कृतघ्न' आदि कविताओं में भी नैतिकता के प्रति कवि का झुकाव दिखाई देता है । वे प्रतिघातात्मक भावना को अनैतिक मानते हैं । प्रतिघात की यह भावना मनुष्य को पतित एवं पशु बना डालती है । अत: 'आत्मोत्सर्ग' में कवि ने इस भावना से प्रेरित हिन्दुओं पर व्यंग्य किया है । 'मृण्मयी' की 'मंजुघोष,' 'लाभालाभ,' 'नाम की प्यास' आदि कृतियों में भी कवि ने नैतिक आग्रह ही प्रकट किया है । 'उन्मुक्त' में हेमा के प्रति किये गये अशिष्ट व्यवहार के प्रसंग में नैतिकता के अभाव में मानवता के पतन की भर्त्सना की गई है । वे मानव की अत्यधिक परिग्रह वृत्ति को भी नीति विरुध्द मानते हैं । इस परिग्रह वृत्ति के कारण ही मनुष्य अपने लक्ष्य से च्युत हो चोरी एवं हत्या जैसा जघन्य अपराध करने से भी नहीं चूकता । 'पुनरपि' कविता में कवि ने मनुष्य की परिग्रह वृत्ति का ही अंकन किया है तथा यह स्पष्ट करना चाहा है कि कार्य की सफलता साधन की शुध्दता पर ही निर्भर करती है । जब तक साधन शुध्द नहीं होगा, तब तक सफलता कदाचित ही मिले । भारत ने इन्हीं शुध्द साधनों के बल पर स्वतंत्रता हासिल की थी । उसका रस्ता डाकू के समान पीछे से वार करने का नहीं था । गांधीजी ने अहिंसात्मक आंदोलन व्दारा सद्धुम एवं सद्साधन से ही उसे प्राप्त किया था अत: उसका महत्त्व अधिक है । इसी तथ्य को कवि ने 'जयहिन्द' में उद्घाटित किया है । 'भोला,' 'खादी की चादर,' 'अनाथ' आदि कृतियों में मानव की अपरिग्रह वृत्ति का ही अंकन हुआ है । कवि की श्रम के प्रति भी अनन्य निष्ठा है । 'स्वाश्रयी' कविता में कवि ने मनुष्य को स्वयं अपना आत्मविश्वास जीतने, निर्भय होने और अपने पैरों पर खड़ा होने का संदेश दिया है । 'उन्मुक्त' में भी श्रम की महत्ता को दर्शाया गया है । उनकी दृष्टि में शारीरिक श्रम करके कमाया जानेवाला अल्प धन भी विशेष महत्त्व रखता है । कवि ने गुणधर के माध्यम से श्रम से पैदा की गई रोटी के महत्त्व को प्रतिपादित किया है ।

समाज की कुरीतियों की ओर भी कवि का ध्यान गया है। समाज में प्रचलित वे कुरीतियाँ जो प्रगति के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं, कवि को प्रिय नहीं हैं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों से पीड़ित सामाजिक जीवन के करुण चित्र अंकित कर समाज के इन दूषणों को समाज से निकाल फेंकने का प्रयत्न किया है। सामाजिक चेतना का उद्रेक 'आर्द्रा' काव्य में देखने को मिलता है। इसी सामाजिक चेतनाधारा को ध्यान में रखकर डॉ. सुधीन्द्र ने लिखा है "संपूर्ण हिन्दी कविता की परंपरा में यदि किसी काल की कविता पूर्ण समाजस्पर्शी होने का धर्म पालन करती है तो वह व्दिवेदी काल की कविता।"[1] 'आर्द्रा', 'अनाथ' आदि कृतियाँ सामाजिक भावना से संबध्द है। इनमें सामाजिक दुर्व्यवस्था का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्र अंकित किया गया है। कवि ने दहेज प्रथा, विधवा जीवन, अनमेल विवाह, अस्पृश्यता, शोषण, धर्माडम्बर, इत्यादि सामाजिक बुराइयों की ओर दृष्टि निक्षेप किया है तथा उनकी कटु आलोचना की है और आदर्श का भी संकेत किया है। 'नृशंस' में कवि ने दहेजप्रथा पर व्यंग्य किया है। इस कुप्रथा के कारण असंख्य कन्याएँ या तो कुंवारी ही रह जाती हैं या ब्याह के पश्चात् भी उन्हें असह्य यातनाएँ झेलनी पड़ती है। इसी दहेज प्रथा ने अनमेल विवाह की कुप्रथा को भी बढ़ावा दिया है। गुप्तजी ने दहेज को इस कुप्रथा को घातक कंस की उपमा दी है तथा इसे समाज से उखाड़ फेंकने की प्रेरणा दी है। 'एक फूल की चाह' में अस्पृश्यता की भावना पर तीखा व्यंग्य किया गया है। इसमें कवि की अस्पृश्य जाति के प्रति करुणा ही व्यक्त हुई है। 'डाक्टर' कविता में धन के प्रति आसक्त एवं कर्तव्य के प्रति उदासीन डाक्टर के प्रति कवि का आक्रोश प्रकट हुआ है। 'अनाथ' में कवि ने किसानों की दयनीय अवस्था पर क्षोभ प्रकट किया है और दु:ख एवं दारिद्र्य को उत्पन्न करनेवाली शोषण पध्दति को समाप्त करने की आकांक्षा प्रकट की है। तथा जमींदारी एवं पुलिस के अत्याचारों की घोर निंदा की है। राजनीतिक दावपेंच के कारण कानपुर में जो साम्प्रदायिकता की ज्वाला भड़क उठी थी उसमें भस्मीभूत होते हुए समाज की झाँकी कवि ने 'आत्मोत्सर्ग' एवं 'नोआखली में' चित्रित की है।

---

१. हिन्दी कविता में युगांतर : डॉ. सुधीन्द्र : पृ. १४२

सियारामशरणजी विधवा जीवन से भी अत्यंत व्यथित दिखाई देते हैं। विधवा नारी के करुणापूर्ण जीवन का चित्रण 'चोर' एवं 'खादी की चादर' कविताओं में हुआ है। उन्होंने विधवा नारियों के प्रति करुणा प्रदर्शित करते हुए 'चोर' कविता में विधवा विवाह प्रथा की ओर भी संकेत किया है। वास्तव में नारी के लिये उनके मनमें श्रध्दा, सम्मान और सहानुभूति की भावना है। अत: जब वे देखते हैं कि पुरुष नारी के त्याग और बलिदान पर ध्यान न देकर उसे केवल भोग का साधन मान उसका अपमान करने से भी नहीं चूकता तब वे उसके उध्दार के लिये व्यग्र हो उठते हैं। लज्जा अपहृत नारी की अवदशा को देखकर कवि का मन क्षोभ से भर उठता है। 'नकुल' में एक स्थान पर द्रौपदी के चीरहरण की चर्चा व्दारा पुरुष के कटु व्यवहार पर आक्षेप किया गया है। समाज के व्दारा प्रताड़ित, पीड़ित एवं अपहृत नारी यदि प्रयत्न करके अपनी लाज बचाकर पवित्र लौट भी आती है तो समाज उसे सम्मानित स्थान नहीं देता। उसे अपवित्र या कुलटा कहकर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। पति भी पत्नी की विडंबना से अनजान हो समाज की झूठी मानमर्यादा की झोंक में पड़कर पत्नी को तरह तरह से अपमानित कर त्याग देता है। 'अग्नि परिक्षा' में कवि ने नारी के भाग्य की इसी विडम्बना पर क्षोभ प्रकट किया है। गुप्तजी की नारियाँ केवल अबला ही नहीं है, वे अन्याय का प्रतिकार करने में भी सबल हैं। इन्दु इसी प्रतिकार भावना से प्रेरित होकर स्वस्ति का बचाव करने के लिये उद्यत होती है। गुप्तजी की दृष्टि में पुरुष और स्त्री दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के बिना जीवन अपूर्ण रह जाता है। द्रौपदी भीषण परिस्थितियों में भी पति के सान्निध्य से अपने भाग्य को सराहती है और अर्जुन भी सतीसाध्वी पत्नी को पाकर धन्य हो उठता है। इस तरह 'नकुल' में कवि ने यह प्रतिपादित किया है कि नारी पुरुष की दासी न होकर पूरक शक्ति है। उसीके संसर्ग से इस धरतीपर स्वर्ग की स्थापना संभव हो सकती है। सियारामशरणजी नारी की इस अपार शक्ति से अभिभूत हैं। उनके काव्य में चित्रित नारी मनुष्य को पग पग पर मानवता का पाठपढ़ाती है। 'मृण्मयी' की 'लाभालाभ' कविता में श्रेष्ठी पत्नी कांता जहाँ धनदत्त की रक्षा करती है

वहाँ उसे उचित सलाह भी देती है। सियारामशरणजी नारी के मातृरूप में ही नारीत्व की पराकाष्ठा देखते हैं। उन्होंने गांधी जैसे लाल को जन्म देनेवाली माता की तुलना उस सीपी से की है जिसने महात्मा गांधी के सदृश मोती को जन्म दिया। 'अनाथ' में सहनशील भारतीय नारी का त्यागमय रूप ही अंकित हुआ है। इस प्रकार नारियों के प्रति कवि का दृष्टिकोण अत्यंत स्वस्थ रहा है।

सियारामशरणजी के काव्य में राष्ट्रीय भावना को भी पर्याप्त अभिव्यक्ति मिली है। 'मौर्य विजय' व्दारा कवि ने देशवासियों का ध्यान वर्तमान दुर्दशा की ओर आकृष्ट किया है। यह अतीत गौरवगान की सर्वोत्कृष्ट एवं सुप्रसिध्द रचना है। इस रचना के व्दारा कवि ने मौर्यकालीन भारत के गौरव का गहन दर्शन कराया है, और हिन्दू जाति को उत्थान का संदेश दिया है। इसमें कवि ने देश की सुषुप्त राष्ट्रीय भावना को जागृत किया है तथा वर्तमान और भविष्य की समस्याओं पर भी विचार किया है।'जागरण-प्रसंग' में परतंत्र भारतवासियों को नवजागरण का संदेश दिया गया है।'उन्मुक्त' में मृदुला एवं वृध्दा के चरित्र व्दारा कवि ने राष्ट्र को यह शिक्षा भी दी है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये बडे से बड़ा त्याग भी करना चाहिए। 'बंदी' कविता में देशप्रेम की उत्कट भावना के कारण ही बंदी शारीरिक यातनाओं को सहकर भी अपने साथियों का नाम बताना अनुचित समझता है। इसमें उत्कट देशप्रेमी का रूप देखा जा सकता है। 'आत्मोत्सर्ग' में भी राष्ट्रीय भावना का मुखर स्वर है। किंतु सियारामशरणजी उग्रतावादी राष्ट्रीयता के समर्थक नहीं है। उसमें स्वदेशप्रेम की भावना का पूर्ण सामंजस्य है। 'पाथेय' की 'असफल' एवं 'शंखनाद' शीर्षक कविताओं में भी राष्ट्रीयता का स्वर मुखरित हुआ है। वह 'शंखनाद' के व्दारा देश की निष्क्रिय एवं सुषुप्त शक्तियों को जगाना चाहता है। कवि वर्तमान पीड़ित व्यक्ति और क्रंदनमय राष्ट्रीय अवस्था से क्षुब्ध हो नवनिर्माण के स्वरूप की आकांक्षा कर उठता है। अतः वह शिव से अर्चना करता है कि वे ऐसी प्रलय ज्वालाएँ धधकाएँ जिसे अंधे होते हुए भी लोग देख सकें तथा इस प्रलय की ज्वाला में जलकर जड़ता, जर्जरता एवं

निस्सारता भस्मशेष हो जाय। गांधीवादी होते हुए भी उसकी वाणी में प्रलय, क्रांति और विनाश का स्वर मुखरित हुआ है क्योंकि उसका मानना है कि विनाश और पतन के व्दारा ही नवनिर्माण, नयी सृष्टि, जीवन के नये मूल्य, नयी मान्यताएँ और नये विश्वास जन्म लेते हैं। कवि पुरातनता के दुर्बल अंश को इस लिये भी नष्ट करना चाहता है क्योंकि उसकी मान्यता है कि इसके निरंतर बने रहने से वर्तमान निष्क्रियता बनी रहेगी। 'असफल' कविता व्दारा कवि ने जनमानस में आत्मविश्वास जगाने का प्रयत्न किया है। 'मृण्मयी' की 'पुनरपि' कविता में भी अहिंसात्मक आंदोलन के औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कवि ने साधन की शुध्दता के प्रति ही आग्रह प्रकट किया है। संक्षेप में, सियारामशरणजी की राष्ट्रीयता में आक्रोश का पूर्ण अभाव है। उनकी राष्ट्रीयता में सत्य, अहिंसा, प्रेम जैसे तात्त्विक गुण ही सम्मिलित हैं। उनकी राष्ट्रीयता में सर्वजन हित की कल्याणकारी भावना का ही निरूपण हुआ है। 'जयहिन्द' कविता में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना का समर्थन हुआ है। उनका विश्वास है कि सबका कल्याण करके ही कोई राष्ट्र अपना कल्याण कर सकता है। "कर उसका उन्नयन स्वयं उन्नत होंगे हम" में यही भाव दिखाई देता है। लोकमंगल की इस भावना से उनका संपूर्ण काव्य ओतप्रोत है। इसीलिये वे किसी एक जाति या राष्ट्र के कवि न होकर जन जन के कवि बन गये हैं। उन्होंने भी गांधीजी के समान नीतिपूर्ण राजनीति का ही आग्रह प्रकट किया है जो कि गांधीवाद के सर्वथा अनुकूल है।

सियारामशरणजी ने यांत्रिकता का विरोध करते हुए पूंजीवादी सभ्यता पर भी करारी चोटें की है तथा अर्थ के समान वितरण के लिये धनिकों को त्याग करने के लिये भी प्रेरित किया है। 'त्याग' का यह आदर्श 'नकुल' में प्रतिष्ठित किया गया है। छोटों के लिये बडों का स्वेच्छा से सर्वस्व त्याग करना गांधीवादी ह्रदय परिवर्तन को ही सिध्द करता है। यदि समाज में छोटे लोगों का शोषण इसी तरह होता रहेगा, तो उनमें प्रतिक्रिया स्वरूप विस्फोट की भावना पैदा होगी और उससे समाज की शांति भंग होगी। अत: यदि हमें सामाजिक शांति को बनाये रखना है, तो इसका एकमात्र उपाय त्याग है।

यहाँ समवितरण के स्थान पर पूर्ण त्याग को ही समस्या का समाधान बताया गया है। त्याग का यह आदर्श 'गोपिका' में भी स्थापित किया गया है। 'गोपिका' में प्रतिपादित संघर्ष का अंत त्याग तथा व्यापक भावना व्दारा कराकर कवि ने समस्या का गांधीवादी समाधान ही प्रस्तुत किया है। 'बाढ़' कविता में भी कवि ने धनिकों से निर्धनों की सहायता के लिये आह्वान किया है। इस प्रकार अर्थत्याग की इस भावना में ट्रस्टीशिप के सिध्दांत का ही समर्थन हुआ है। गांधीजी ने आर्थिक समानता के लिये चरखाएवं खादी के महत्त्व को भी स्वीकार किया था। सियारामशरणजी ने भी 'खादी की चादर' कविता में विधवा नारी चम्पा को चरखे व्दारा सूत कातते हुए दिखाकर युगीन प्रभाव को ही स्पष्ट किया है। इस प्रकार सियारामशरणजी की कविताओं का अनुशीलन करने पर यह सहज ही स्पष्ट हो जाता है कि उनकी कविताओं में गांधीदर्शन के सैध्दांतिक पक्ष का सांगोपांग विवेचन हुआ है।

सियारामशरणजी का काव्य सोद्देश्य है। वे काल्पनिक रंगिनियों में विचरण करना अनुचित मानते हैं। वे मात्र कल्पना के आधार पर काव्य वधू का श्रृंगार करना नहीं चाहते। बल्कि वे अपने युग के यथार्थ जीवन का अंकन करना ही श्रेयस्कर मानते हैं। यही कारण है कि श्रृंगार वर्णन के स्थान पर उनका मन समाज के दीन-हीन उपेक्षित प्राणियों के चित्रांकन में ही अधिक रमा है। उन्होंने मानव जीवन का यथार्थ चित्र अंकित करते हुए मानव जाति को अमर संदेश दिये हैं।

उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति भी दृढ़ आस्था प्रकट हुई है। "कवि का विश्वास संस्कृतियों के परस्परावलंब की ओर भी है, किंतु वह केवल विचारों तक ही सीमित है उसे वे अपने जीवन में उतारने से हिचकते हैं।"[१] उन्हें अन्य संस्कृतियों की वे बातें प्रिय हैं जिनसे मानव जीवन

---

१. सियारामशरण गुप्त : सृजन और मूल्यांकन : डॉ. ललित शुक्ल
पृ. ३७६

को प्रेरणा मिलती है, जिनमें दीन दुखियों के प्रति सहानुभूति को विशेष महत्व दिया गया है। 'अमृतपुत्र' की रचना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है।

इस प्रकार गांधीवादी कवियों में सियारामशरणजी का नाम शीर्षस्थ है। वे द्विवेदी युग के प्रतिनिधि एवं प्रसिध्द कवि है। उन्होंने गांधीवाद से संपृक्त जो काव्य हिन्दी साहित्य जगत को प्रदान किया है उसका महत्व निश्चय ही अक्षुण्ण रहेगा।